Swarnakarshan Bhairav Sadhana

स्वर्णाकर्षण भैरव साधना

स्वर्णाकर्षण भैरव की साधना से दरिद्रता का नाश होता है और लक्ष्मी जी स्थिर होती हैं। आप सब जानते हैं कि लक्ष्मी अस्थिर होती हैं, इसलिए इनकी स्थिरता के लिए किसी पुरूष देवता की उपासना अति आवश्यक है। स्वर्णाकर्षण भैरव की उपासना साधना करने से व्यक्ति की आय के साधनों में वृद्धि होती है और लक्ष्मी की स्थिरता होती है।

वास्तव में दरिद्रता व्यक्ति के लिए एक अभिशाप है। चाहे ऐसा व्यक्ति कितना भी योग्य क्यों न हो, समाज में उसका कोई स्थान नहीं होता, कोई सम्मान नहीं होता। इस अभिशाप से पीड़ित व्यक्ति उसकी पीड़ा स्वयं ही समझ सकता है, अन्य कोई नहीं । समाज उसे हिकारत की दृष्टि से देखता है। यह कोई नहीं समझता कि उसका व्यक्तित्व कैसा है, उसके विचार कैसे हैं, अथवा उसके आचरण कैसे हैं। ऐसा व्यक्ति पल-पल जीता मरता है।

ऐसे दरिद्र व्यक्तियों को दृष्टिगत रखते हुए हमारे प्रबुद्ध अनुसंधान कर्ताओं ने अनेक ऐसी साधनाएं हमारे लिए उपलब्ध करायीं, जिनके साधन करने पर हमारा दरिद्रता का कलंक हमारे सिर से हट जाएं । ऐसे ही प्रयोगों में एक साधना स्वर्णाकर्षण भैरव की साधना भी है, जिसका उल्लेख मैं यंहा कर रहा हूँ। दरिद्रता के नाश के लिए एवं धन प्राप्ति के लिए और बगलामुखी साधना में इस भैरव का विशेष महत्व भी है और इस साधना के साधन से दरिद्र व्यक्ति अत्यधिक लाभ प्राप्त कर सकता है।

प्राथमिक कृत्यों से निवृत होकर सर्वप्रथम हाथ में जल लेकर विनियोग करें यथा.....

DR.PUPNATH JI (DR.PUPAK NATH)

www.astrology-tantra.com

विनियोग :- ओम अस्य श्री स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्ति छन्दः, हरिहर ब्रह्मात्मक स्वर्णाकर्षण भैरवो देवता, ह्रीं बीजं, सः शक्ति, ओम कीलकं, मम-दारिद्रय-नाशार्थे, स्वर्ण राशि प्राप्तयर्थे स्वर्णाकर्षण भैरव प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

ऐसा बोलकर हाथ में लिया जल भूमि पर छोड़ दें। उसके बाद न्यास करें, यथा.....

ऋष्यादि न्यास :-

ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि ।
पंक्ति छन्दसे नमः मुखे।
स्वर्णाकर्षण देवताया नमः हृदि।
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ।
सः शक्तिः नमः पादयो।
ओम कीलकाय नमः नाभौ।
विनियोगााय नमः सर्वांगे ।

इसके बाद करांगन्यास करें, यथा.....

ओम् ऐं ह्रीं श्रीं आपद्-उद्धारणाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ओम् ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिल-बद्धाय तर्जनीभ्यां नमः।
ओम् लोकेश्वराय मध्यमाभ्यां नमः।
ओम् स्वर्णाकर्षण भैरवाय अनामिकाभ्यां नमः ।
ओम् ममदारिद्रय विद्वेषणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ओम् महा-भैरवाय नमः। श्रीं ह्रीं ऐं करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

मंत्र के इन्हीं पक्षों का प्रयोग करते हुए अंग न्यास करें, यथा-

DR.RUPAK NATH JI (DR.RUPAK NATH)

www.astrology-tantra.com

हृदयाय नमः, शिरसि स्वाहा, शिखायै वषट्, कवचाय हुम्, नेत्र त्रयाय वौषट्, अस्त्राय फट्।

न्यास करने के उपरान्त भगवान स्वर्णाकर्षण भैरव का ध्यान करें, यथा.....

ध्यान

पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम् ।
अक्ष्यं स्वर्ण-माणिक्यं तडित-पूरित पात्रकम् ।।
अभिलषितं महाशूलं चामरं तोमरो-द्वहम्।
सर्वा-भरण-सम्पन्नं मुक्ता-हारोप-शोभितम्।।
मदोन्मत्तं सुखासीनं भक्तानां च वर प्रदम्।
सततं चिन्तयेद्देवं भैरवं सर्व-सिद्धिदम्।।

इस प्रकार ध्यान करने के उपरान्त स्वर्णाकर्षण भैरव का मंत्र जप करें।

मंत्र :- ओम ऐं ह्रीं श्रीं आपद्-उद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिल-बद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण भैरवाय ममदारिद्रय विद्वेषणाय महा-भैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं

इस मंत्र की तीन, पाचं अथवा ग्यारह माला का इकतालीस दिनों तक नित्य जप करें। तदोपरान्त उसका दशांश हवन, तद्दशांश तर्पण तद्दशांश मार्जन एवं उसके बाद ब्राह्मण भोज कराकर अपने गुरूवर, माता-पिता एवं बृद्धों से आशीर्वाद

DR.PURNATHJI (DR.PURAK NATH)

www.astrology-tantra.com

प्राप्त करें। निश्चय ही आपकी दरिद्रता का अंत हो जायेगा और आप समाज में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करने में सफल हो जायेगें । ईश्वर से, भगवान भैरव नाथ से आपके लिए मेरी यही हार्दिक शुभ कामनाएं हैं।

DR.RUPNATHJI (DR.RUPAK NATH)

www.astrology-tantra.com